अव्यक्त इशारे
समय की समीपता प्रमाण अव्यक्त फरिश्ता बनो)

1) जैसे सम्पन्नता का समय समीप आता जा रहा है, ऐसे देह-भान रहित फरिश्ता रूप की हर एक को अनुभूति कराओ। जैसे साकार ने कर्म करते, बातचीत करते, डायरेक्शन देते, उमंग-उत्साह बढ़ाते भी देह से न्यारे, सूक्ष्म प्रकाश रूप की अनुभूति कराई। ऐसे बात करते भी आपकी दृष्टि में अलौकिकता दिखाई दे। ऐसे देह- भान से न्यारे रहो जो दूसरे को भी देह का भान नहीं आये।
2) हर बात में, वृत्ति, दृष्टि, कर्म... सब में न्यारापन अनुभव हो। यह बोल रहा है लेकिन न्यारा-न्यारा, आत्मिक प्यारा, ऐसे फरिश्तेपन की अनुभूति स्वयं भी करो और औरों को भी कराओ। ब्रह्मा बाप जो फरिश्ता रूप में आप सबका साथी है, अब उनके समान आप सभी को फरिश्ता बनना है फिर परमधाम चलना है, इसके लिए मन की एकाग्रता पर अटेन्शन दो। ऑर्डर से मन को चलाओ।
3) सदैव अपना आकारी रूप, लाइट का फरिश्ता स्वरूप सामने दिखाई दे कि ऐसा बनना है और भविष्य रूप भी दिखाई दे। अब यह छोड़ा और वह लिया। जब ऐसी अनुभूति हो तब समझो कि सम्पूर्णता के समीप हैं। यह पुरुषार्थी शरीर एकदम मर्ज हो जाये।
4) फरिश्ता बनना अर्थात् साकार शरीरधारी होते हुए लाइट रूप में रहना अर्थात् सदा बुद्धि द्वारा ऊपर की स्टेज पर रहना। फरिश्ते के पांव धरनी पर नहीं रहते, बुद्धि रूपी पांव सदा ऊंची स्टेज पर। 'फरिश्तों को ज्योति की काया दिखाते हें। तो जितना अपने को प्रकाश स्वरूप आत्मा समझेंगे, तो चलते फिरते अनुभव करेंगे जैसे प्रकाश की काया वाले फरिश्ते बनकर चल रहे हैं।
5) फरिश्ता अर्थात अपनी देह के भान से भी रिश्ता नहीं, देहभान से रिश्ता टूटना अर्थात् फरिश्ता। देह से नहीं, देह के भान से। देह से रिश्ता खत्म होगा तब तो चले जायेंगे, लेकिन देह-भान का रिश्ता खत्म हो। जैसे बापदादा पुराने शरीर का आधार लेते हैं लेकिन शरीर में फंस नहीं जाते हैं। ऐसे कर्म के लिए आधार लो और फिर अपने फरिश्ते स्वरूप में, निराकारी स्वरूप में स्थित हो जाओ।
6) जबकि बाप के बन गये और सब कुछ मेरा सो तेरा कर दिया तो हल्के फरिश्ते हो ही गये। इसके लिए सिर्फ एक ही शब्द याद रखो कि यह सब बाप का है, मेरा कुछ नहीं जहाँ मेरा आये वहाँ तेरा कह दो फिर कोई बोझ नहीं फील होगा।
7) फरिश्ता अर्थात् डबल लाइट। फरिश्ता सदा चमकने के कारण सर्व को अपनी तरफ स्वत: आकर्षित करता है। फरिश्ता सदा ऊंचे रहते हैं। फरिश्तों को पंख दिखाते हैं क्योंकि उड़ते पंछी हैं। तो जब बाप मिला, ऊंचा स्थान मिला, ऊंची स्थिति मिली तो सदा उड़ते रहो और बेहद सेवा करते रहो।
8) फरिश्ता वही बनता जिसका देह और देह की दुनिया के साथ कोई रिश्ता नहीं। शरीर में रहते ही हैं सेवा के अर्थ, न कि रिश्ते के आधार पर। सम्बन्ध समझकर प्रवृत्ति में नहीं रहना,

सेवा समझकर रहना। कर्मबन्धन के वशीभूत होकर नहीं रहना। जहाँ सेवा का भाव है वहाँ सदा शुभ भावना रहती है, और कोई भाव नहीं, इसको कहा जाता है अति न्यारा और अति प्यारा, कमल समान।

9) फरिश्ता स्वरूप अर्थात् लाइट का आकार, जिसमें कोई व्याधि नहीं, कोई पुराने संस्कार स्वभाव का अंश नहीं, कोई देह का रिश्ता नहीं, कोई मन की चंचलता नहीं, कोई बुद्धि के भटकने की आदत नहीं - ऐसा फरिश्ता स्वरूप, प्रकाशमय काया का अनुभव करो तो देह के स्वार्थी सम्बन्ध, सुख-शान्ति का चैन छीनने वाले विनाशी सम्बन्धी, मोह की रस्सियों में बांधने वाले, ऐसे अनेक सम्बन्ध स्वत: छूट जायेंगे। एक सुखदाई सम्बन्ध में ही सदा रहेंगे।

10) हम ब्राह्मण सो फरिश्ता हैं, यह कम्बाइन्ड रुप की अनुभूति विश्व के आगे साक्षात्कार मूर्त बनायेगी। ब्राह्मण सो फरिश्ता इस स्मृति द्वारा चलते-फिरते अपने को व्यक्त शरीर, व्यक्त देश में पार्ट बजाते हुए भी ब्रह्मा बाप के साथी अव्यक्त वतन के फरिश्ते, अव्यक्त रूपधारी अनुभव करेंगे। यह अव्यक्त भाव व्यक्तपन के बोल-चाल, व्यक्त भाव के स्वभाव, व्यक्त भाव के संस्कार सहज ही परिवर्तन कर देगा।

11) फरिश्ता अर्थात् दिव्यता स्वरूप। दिव्यता की शक्ति साधारणता को समाप्त कर देती है। जितनी-जितनी दिव्यता की शक्ति हर कर्म में लायेंगे उतना ही सबके मन से, मुख से स्वतः ही यह बोल निकलेंगे कि यह दिव्य दर्शनीय मूर्त हैं। अनेक भक्त जो दर्शन के अभिलाषी हैं, उनके सामने आप स्वयं दिव्य दर्शन मूर्त प्रत्यक्ष होंगे तब ही सर्व आत्मायें दर्शन कर प्रसन्न होंगी।

12) फरिश्ता अर्थात् जिसकी दुनिया ही एक बाप है। निमित्त मात्र देह में हैं और देह के सम्बन्धियों से कार्य में आते हैं लेकिन लगाव नहीं। अभी- अभी देह में कर्म करने के लिए आये और अभी-अभी देह से न्यारे। फरिश्ते सेकण्ड में यहाँ, सेकण्ड में वहाँ क्योंकि उड़ने वाले हैं। कर्म करने के लिए देह का आधार लिया और फिर ऊपर अब यही अभ्यास बढ़ाओ।

13) फरिश्ता जीवन की विशेषता है - इच्छा मात्रम अविद्या। देवताई जीवन में तो इच्छा की बात ही नहीं। जब ब्राह्मण जीवन सो फरिश्ता जीवन बन जाती अर्थात कर्मातीत स्थिति को प्राप्त हो जाते तब किसी भी शुद्ध कर्म, व्यर्थ कर्म, विकर्म वा पिछला कर्म, किसी भी कर्म के बन्धन में नहीं बंध सकते।

14) फरिश्ता स्थिति का अनुभव करने के लिए विशाल दिल वाले बेहद के स्मृति स्वरूप बनो। जहाँ बेहद है वहाँ कोई भी प्रकार की हद अपने तरफ आकर्षित नहीं कर सकती। कर्मातीत का अर्थ ही है - सर्व प्रकार के हद के स्वभाव-संस्कार से अतीत अर्थात न्यारा।

15) फरिश्ता जीवन बन्धनमुक्त जीवन है। भल सेवा का बन्धन है, लेकिन इतना फास्ट गति है जो जितना भी करे, उतना करते हुए भी सदा फ्री है। जितना ही प्यारा, उतना ही न्यारा। सदा ही स्वतन्त्रता की स्थिति का अनुभव करते हैं। शरीर और कर्म के अधीन नहीं, अगर देहधारियों के सम्बन्ध में आते भी हैं तो ऊपर से आये, संदेश दिया और यह उड़ा।

16) सम्पन्न बनना अर्थात् अपनी अन्तिम फरिश्ते जीवन की मंजिल पर पहुंचना। जितना-जितना इस अन्तिम मंजिल के नज़दीक आते जायेंगे उतना सब तरफ से न्यारे और बाप के प्यारे बनते जायेंगे। जैसे कोई चीज़ जब बनकर तैयार हो जाती है तो किनारा छोड़ देती है, ऐसे जितना सम्पन्न स्टेज के समीप आते जायेंगे उतना सर्व से किनारा होता जायेगा। तो सब बन्धनों से, सब तरफ के लगावों से वृत्ति द्वारा किनारा होना अर्थात् सम्पन्न वा सम्पूर्ण बनना।

17) सम्पूर्णता को समीप लाने के लिए सिर्फ दो शब्द याद रखो मैं बिन्दु हूँ और बाप भी बिन्दु है, लेकिन बिन्दु के साथ-साथ सिंधु है। तो एक बिन्दु की याद और एकरस अवस्था, एक की ही मत और एक के ही कर्तव्य में मददगार बनो। बाकी विस्तार में जाने की दरकार नहीं। विस्तार में जाना है तो सिर्फ सर्विस प्रति। अगर सर्विस नहीं तो बिन्दु, उसके आगे अपनी बुद्धि को चलाने की आवश्यकता नहीं है। यही सहज विधि है - सम्पूर्णता को प्राप्त करने की।

18) सम्पन्नता सदा सन्तुष्टता का अनुभव कराती है। सन्तुष्ट आत्मायें सम्पन्न होने के कारण किसी से भी तंग नहीं होगी। सम्बन्ध में भी कोई खिटखिट नहीं होगी। अगर होगी भी तो उसका असर नहीं आयेगा। किसी भी प्रकार की उलझन या विघ्न एक खेल अनुभव होगा। समस्या भी मनोरंजन का साधन बन जायेगी क्योंकि नॉलेजफुल होकर देखेंगे।

19) जैसे बाप सम्पन्न है इसलिए बाप की महिमा में सागर शब्द कहते हैं, यह सम्पन्नता को सिद्ध करता है। तो बाप समान मास्टर सागर बनना ही सम्पन्न बनना है। नदी तो फिर भी सूख जाती है। सम्पन्न आत्मायें सदा खुशी में नाचती रहेंगी। खुशी के सिवाए और कुछ अन्दर आ नहीं सकता।

20) अभी बाप समान स्वयं को और सेवा को सम्पन्न करो। बाप समान अव्यक्त वतनवासी फरिश्ता बन जाओ। बापदादा अभी भी आह्वान करते हैं। अब रहे हुए थोड़े समय में सर्व बातों में स्वयं को सम्पन्न बनाओ। अगर एक भी सम्बन्ध वा गुण की कमी है तो सम्पूर्ण स्टेज वा सम्पूर्ण मूर्त नहीं कहला सकते। बाप का गुण वा अपना आदि स्वरूप का गुण अनुभव न हो तो सम्पन्न मूर्ति कैसे कहेंगे इसलिए सबमें सम्पूर्ण बनना है।

21) जैसे बापदादा व्यक्त में आते भी अव्यक्त रूप के, अव्यक्त देश के अव्यक्ति प्रवाह में रहते हैं। बच्चों को यह अनुभव कराने के लिए साकार वतन में आते हैं। ऐसे आप सभी भी अपने अव्यक्त स्थिति का अनुभव औरों को कराओ। जब अव्यक्त स्थिति की स्टेज सम्पूर्ण होगी तब ही अपने राज्य में साथ चलना होगा। तो एक आंख में अव्यक्त सम्पूर्ण स्थिति, दूसरी आंख में राज्य पद हो।

22) बापदादा सभी बच्चों के सम्पूर्ण मुखड़े देखते हैं। सम्पूर्णता नम्बरवार होगी। माला के 108 मणके जो हैं, तो नम्बरवन मणका और एक सौ आठवाँ मणका दोनों को सम्पूर्ण अर्थात् विजयी रत्न कहेंगे। लेकिन अपने नम्बर प्रमाण सम्पूर्णता को प्राप्त करेंगे। उनके लिए सारे ड्रामा के अन्दर वही सम्पूर्णता की फर्स्ट स्टेज है।

23) सम्पूर्णता को प्राप्त करने के लिए सदा उपराम और दृष्टा बनो। अपनी देह से भी उपराम,

अपनी बुद्धि से उपराम, मेरे संस्कार हैं, इस मेरेपन से भी उपराम। मैं यह समझती हूँ, इस मैं पन से भी उपराम। तो मैं शरीर हूँ, एक तो यह छोड़ना है, दूसरा मैं समझती हूँ, मैं ज्ञानी तू आत्मा हूँ, मैं बुद्धिमान हूँ, यह मैं पन मिटाना है। जहाँ मैं शब्द आता है वहाँ बापदादा याद आये। जहाँ मेरी समझ आती है वहाँ श्रीमत याद आये। ऐसे ही साक्षी दृष्टा भी बनना है तब ही सम्पूर्णता को प्राप्त कर सकेंगे।

24) आपकी लास्ट सम्पन्न स्टेज का गायन है - सर्वगुण सम्पन्न, सोलह कला सम्पन्न, सम्पूर्ण निर्विकारी, सम्पूर्ण अहिंसक.... महिमा में भी सबके साथ सम्पन्न व सम्पूर्ण शब्द है। तो चेक करो यह सम्पन्न-पन का वर्सा बाप द्वारा प्राप्त कर लिया है? कहाँ तक सम्पन्न वा सम्पूर्ण बने हैं?

25) सम्पन्नता अचल स्थिति का अनुभव कराती है। जब सब बातों में सम्पन्न बनेंगे तब यह आंख व बुद्धि किसी तरफ नहीं डूबेगी। सदा रुहानियत में रहेंगे। अनेक व्यर्थ संकल्पों वा अनेक तरफ बुद्धि व दृष्टि जाने से परे, सर्व फिकरों से फारिग और अपने बाप द्वारा मिले हुए खजाने में सदा रमण करते रहेंगे। अन्य कोई संकल्प करने की फुर्सत नहीं होगी।

26) अपनी सब जिम्मेवारियों का बोझ बाप को देकर आप डबल लाइट स्थिति में फरिश्तों की दुनिया में रमण करते रहो। फरिश्तों की दुनिया में रहने से बहुत ही हल्कापन अनुभव होगा जैसे कि सूक्ष्मवतन को ही स्थूलवतन में बसा दिया है। जब स्थूल और सूक्ष्म में अन्तर नहीं रहेगा, यह व्यक्त देश जैसे अव्यक्त देश बन जायेगा फिर सम्पूर्णता के समीप आ जायेंगे।

27) सम्पूर्णता को समीप लाने के लिए संस्कारों को मिलाना होगा। संस्कार मिलाने के लिए कुछ भुलाना होगा, कुछ मिटाना होगा और कुछ समाना होगा। इन्हीं तीन बातों से अन्तिम सिद्धि का स्वरूप सहज अनुभव होगा। इसके लिए एक दो की बातों को स्वीकार करो और सत्कार दो तब सम्पूर्णता और सफलता दोनों ही समीप आयेंगी।

28) सम्पन्न बनने वाली आत्माओं के सामने अब परीक्षायें व विघ्न भी अति के रूप में आयेंगे, इसलिये आश्चर्य नहीं खाना है कि पहले यह नहीं था, अब क्यों है? फाइनल पेपर में आश्चर्यजनक बातें क्वेश्चन के रुप में आयेंगी, चाहते हुए भी बुद्धि में क्वेश्चन उत्पन होंगे, यही एक सेकेण्ड का पेपर होगा। क्यों का संकल्प चन्द्रवंशी की क्यू में लगा देगा। जब यह क्यों शब्द निकल जायेगा तब ड्रामा की भावी पर एकरस स्थेरियम रहेंगे। तो अभी क्यों की क्यू को खत्म कर सम्पन्न और सम्पूर्ण बन समय को समीप लाओ।

29) जैसे चन्द्रमा जब 16 कला सम्पूर्ण हो जाता है तो ना चाहते हुए भी हरेक को अपनी तरफ आकर्षित करता है ऐसे कोई भी वस्तु सम्पन्न होती है तो अपने आप आकर्षण करती है। तो जब सम्पूर्णता के समीप पहुंचेंगे तो विश्व की सर्व आत्माओं को स्वतः आकर्षित करेंगे क्योंकि सम्पूर्णता में प्रभाव की शक्ति होती है। तो प्रभावशाली बनने के लिए सम्पन्न बनना पड़े।

30) अभी समय प्रमाण लगाव-मुक्त बेहद के वैरागी बनो। मन से वैराग्य हो। सम्पूर्णता के दर्पण से सूक्ष्म लगाव को चेक करो। यही ब्रह्मा बाप के प्यार की गिफ्ट ब्रह्मा बाप को दो, सब किनारे छोड़ो। मुक्त हो जाओ। प्रतिज्ञा करो कि अब समय प्रमाण सम्पूर्णता का दिवस मनाना ही है। ऐसा दृढ़ संकल्प करो कि कुछ भी चला जाए लेकिन यह प्रतिज्ञा न जाए।